इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी एवं पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित लिपिविज्ञान एवं पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण।

(दिनांक 11 जनवरी 2018 – 31 जनवरी 2018)

लिपिविज्ञान एवं पाण्डुलिपिविज्ञान कार्यशाला का उद्घाटन काशी के प्रकाण्ड विद्वान् प्रोफेसर भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी ''वागीश शास्त्री'' जी की अध्यक्षता में तथा ज्योतिषशास्त्र के प्रख्यात विद्वान् प्रोफेसर रामचन्द्र पाण्डेय जी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस 21 दिवसीय कार्यशाला में देश के भिन्न–भिन्न विश्वविद्यालयों से आमन्त्रित किये गये 28 विद्वानों द्वारा 58 व्याख्यान प्रस्तुत हुये तथा कुल 78 सत्र संचालित हुए। इस कार्यशाला में दिल्ली विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,दिगम्बर जैन संस्थान, वाराणसी, टीकमाणी संस्कृत स्नातकोत्तर कालेज, वाराणसी तथा आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, गाजीपुर के छात्रों ने भाग लिया। कुल 33 प्रतिभागियों ने अपना नाम पंजीकृत किया था। नियमित उपस्थिति के आधार पर 25 प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र दिया गया।

परिचय सत्र के बाद पहला व्याख्यान इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के निदेशक डॉ0 विजय शंकर शुक्ल जी का हुआ। डॉ0 शुक्ल जी पाँच व्याख्यान प्रस्तुत किये। पाण्डुलिपियों की लिखित परम्परा से लेकर भारतीय ज्ञान–परम्परा के क्रमबद्ध विकास मार्ग को अति सहज रूप से तथा बोधगम्य शैली से

प्रतिभागियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए आपने समग्र भारत में कहाँ–कहाँ पाण्डुलिपियों का भण्डार सुरक्षित है, पाण्डुलिपियों के कैट्लाग कहाँ–कहाँ से प्रकाशित हैं, उसका उल्लेख किया जो प्रतिभागियों के लिए अनुसन्धान की दृष्टि से अत्यन्त ही उपयोगी रहा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर सीताराम दुबे जी ने चार व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो0 दुबे जी ने ब्राह्मी लिपि के गोलाकार एवं कोणाकार स्वरूप से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए संयुक्ताक्षरों के लेखन में जो कठिनाइयाँ हैं तथा मात्रा लगाने में क्या सावधानी बरतनी चाहिए उसका उल्लेख किया तथा खतकटी लेखनी, सरकण्डी लेखनी, प्रवाहमयी लेखनी एवं अलंकरणात्मक प्रवृत्ति आदि को, लेखन के स्वरूप परिवर्तन का कारण मानते हुए गुप्त तथा वाकाटक काल के लिपियों के विषय में विस्तार से चर्चा की।

कार्यशाला के सप्तम सत्र में भारतीय विद्या के निष्णात आचार्य पण्डित विद्यानिवास मिश्र जी के स्मृति में एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। अंग्रेजी विभाग के भूतपूर्व आचार्य प्रोफेसर रामकीर्ति शुक्ल जी के अध्यक्षता में भारत अध्ययन केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शताब्दी पीठ आचार्य प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी जी का मर्मस्पर्शी व्याख्यान हुआ। पण्डित विद्यानिवास मिश्र जी की स्मृति को प्रो0 त्रिपाठी जी ने एसे प्रस्तुत किया जैसे करुण रस प्रवाहित हो रहा हो। पूरा

सभागार पण्डित जी की स्मृति में गमगीन था, करुण रस के आस्वादन में निमग्न था। इसीलिए शास्त्र में उल्लेख है कि –

करुणे दावपि रसे जायते यत् परं सुखम्।
सचेतसामुनुभवः प्रमाणं तत्र केवलम्।।

अपने द्वितीय व्याख्यान में प्रोफेसर त्रिपाठी जी ने नाट्यशास्त्र के नेवारी संस्करण के सम्पादन विधि का उल्लेख करते हुए उसमें आनेवाले कठिनाइयों से प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा कहा कि भारतीय विद्या के संरक्षण में नेपाल का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा और सुदूर पूर्व से लेकर जापन तक को समझने के लिए नाट्यशास्त्र की अध्ययन की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के गंगानाथ झा परिसर से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर राम किशोर झा जी ने चार व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो0 झा जी ने पाण्डुलिपियों के सम्पादन के क्षेत्र में अर्जित अपने षड्रस मिश्रित अनुभव को अत्यन्त ही रोचक ढंग से पौराणिक आख्यानों के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा साथ–साथ पुरानी देवनागरी लिपि के पठन में आ रहे कठिनाइयों को दूर करने के लिए उसका अभ्यास भी कराया और मैथिली लिपि का वर्ण परिचय कराते हुए उसका भी अभ्यास कराया।

कल्याणी विश्वविद्यालय, कोलकाता से आमन्त्रित नवोदित विद्वान् डॉ0 सोमनाथ सरकार ने तीन व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने व्याख्यानों में डॉ0 सरकार ने पाण्डुलिपियों का कालनिर्धारण कैसे करना चाहिए, काल निर्धारण के समय क्या सतर्कता बरतनी चाहिए तथा भिन्न–भिन्न सम्वत्सरों का निर्धारण कैसे करें ? इन सभी विषयों पर विस्तार से चर्चा की तथा उसका अभ्यास भी कराया।

भारत अध्ययन केन्द्र के यशस्वी समन्वयक तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी जी ने अपने व्याख्यान में पाण्डुलिपियों के वंशवृक्ष निर्माण विधि को अवगत कराते हुए महाभारत के उद्योगपर्व का उदाहरण प्रस्तुत किया।

केरल से आमन्त्रित संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् तथा केरल कलामण्डलम् के शैक्षणिक निदेशक प्रोफेसर सी0 एम0 नीलकण्ठन् जी ने अपने तीन व्याख्यानों में मलयालम लिपि के इतिहास, विकास क्रम तथा ग्रन्थ लिपि से मलयालम लिपि की समानता पर विस्तार से चर्चा की।

मलयालम लिपि के अभ्यास हेतु विषय विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित विद्वान् श्री पी0 एल0 साजी ने दिनांक 14 जनवरी से 24 जनवरी तक मलयालम लिपि का अभ्यास कराया। उनके सरल–स्वभाव, व्यक्तिव एवं लिपि सिखाने की लालसा ने प्रतिभागियों को आकृष्ट किया।

लखनऊ से आमन्त्रित तथा राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर के0 के0 जैन जी Curative Conservation एवं Preventive Conservation विषय पर दो महत्त्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किये।

गुजरात विद्यापीठ, भाषा विभाग के पूर्व निदेशक प्रोफेसर वसन्त कुमार भट्ट ने छः व्याख्यानों में मुख्य रूप से पाठ–सम्पादन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन अत्यन्त ही सुबोध शैली में उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया तथा कवि द्वारा प्रतिपादित मूलपाठ को प्राप्त करने हेतु किस प्रकार उच्चतर समीक्षा का सहयोग लिया जा सकता है उस पर चर्चा करते हुए अभिज्ञान शाकुन्तलम् की बंगाली वाचना, कश्मीरी वाचना, दाक्षिणात्य वाचना आदि को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

पुणे विद्यापीठ से आमन्त्रित भारतीय विद्या के अद्वितीय विद्वान् प्रोफेसर वी0 एन0 झा जी ने माना कि व्याकरण, मीमांसा एवं न्याय शास्त्रों का समुचित ज्ञान के उपरान्त ही ग्रन्थ सम्पादन करना चाहिए। विषय ज्ञान के अभाव में सम्पादन कार्य में यथोचित सफलता नहीं मिल सकती। इसीलिए प्राचीन काल में कवियों को **पदवाक्यप्रमाणज्ञ** उपाधि से अलंकृत किया जाता था।

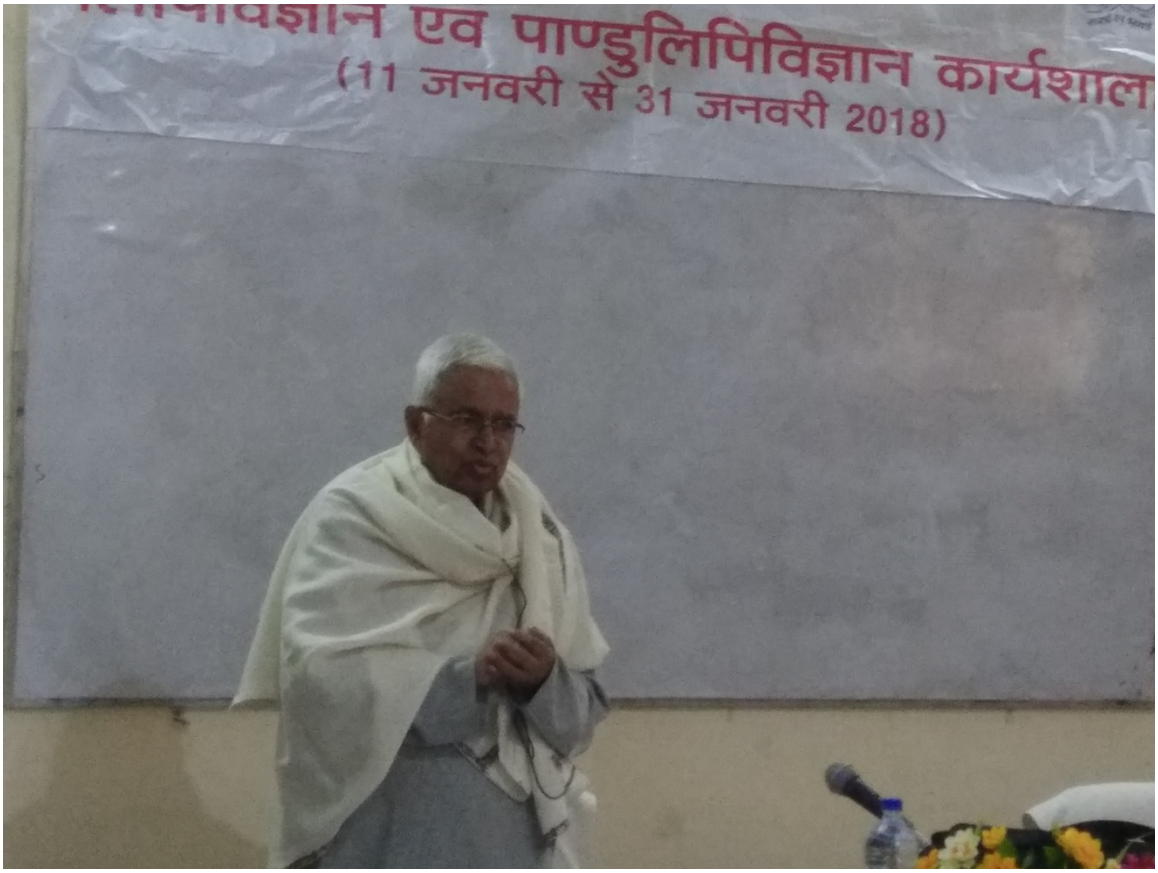

पुणे विद्यापीठ से आमन्त्रित विदुषी प्रोफेसर उज्ज्वला झा जी ने विषय ज्ञान पर बल देते हुए तथा इक्षु–दण्ड का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि यद्यपि इक्षु–दण्ड टेढ़ा–मेढ़ा होता है फिर भी उसका रस अत्यन्त मधुर होता है। ठीक उसी प्रकार सम्पादन कार्य यद्यपि अत्यन्त कठिन एवं परिश्रमसाध्य कार्य है तथापि उसका परिणाम अत्यन्त सुखकर होता है। अतः नूतन पीढ़ी को इस कार्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

एल0 डी0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी, अहमदाबाद के निदेशक प्रोफेसर जितेन्द्र भाई साह जी ने अपने व्याख्यानों में भारत तथा विश्व में जैन पाण्डुलिपियों के भण्डार, जैन आगम के द्वादश अंग, धर्मग्रन्थ, शास्त्रग्रन्थ आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्वकुलपति प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने सम्पादन के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राचीन पाण्डुलिपियों में छिपी ज्ञान सम्पदा का अनुसन्धान अत्यन्त जरूरी है इससे भारतीय बौद्धिक सम्पदा का पता चलता

है। इसके लिए उन्होंने अभिज्ञानशाकुन्तलम्, ऋग्वेद एवं नाट्यशास्त्र का उल्लेख किया। उनके अनुसार सर विलियम जोन्स् द्वारा किये गये अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के अंग्रजी अनुवाद के बाद भारतीय ज्ञान–परम्परा के प्रति विश्वजनमानस की दृष्टि बदली। पाश्चात्य विद्वान् मैक्सम्यूलर द्वारा ऋग्वेद के सायणभाष्य पर जो कार्य हुआ उससे वैदिक वाङ्मय के विषय में सम्पूर्ण यूरोप को जानकारी प्राप्त हुई और नाट्यशास्त्र के प्रकाश में आने के बाद संस्कृत थिएटर को जो प्रतिष्ठ मिला उससे भारत के प्रति विश्वसमुदाय की दृष्टि बदली। इससे पहले यूनानी थिएटर का प्रचलन था।

कलाकोश विभाग के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष तथा सम्प्रति बी0 एल0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी, नई दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर गया चरण त्रिपाठी जी का दो महत्त्वपूर्ण व्याख्यान हुआ। उन्होंने लिपि की उत्पत्ति के साथ–साथ उसके विकास क्रम को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया और कहा कि उच्चतर समीक्षा दुराग्रह रहित होनी चाहिए।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वैदिक धर्म एवं दर्शन विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर राजाराम शुक्ल जी ने पाण्डुलिपियों के सम्पादन के शास्त्रीय विधि का उल्लेख करते हुए स्वपक्ष–साधन, परपक्ष–निराकरण, आभ्यन्तर–प्रयत्न एवं वाह्यप्रयत्न आदि अनेक बिन्दुओं का उल्लेख किया।

लिपिविज्ञान के सुप्रसिद्ध विद्वान् पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रोफेसर महेश्वरी प्रसाद जी ने अशोक–कालीन ब्राह्मी लिपि के स्वरूप से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए उसमें हो रहे क्रमशः परिवर्तन को भी रेखांकित किया तथा मौर्यकालीन अभिलेखों में से अशोक का लुम्बिनी स्तम्भलेख, मथुरा अभिलेख, समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तम्भलेख का अभ्यास कराया।

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर प्रभुनाथ द्विवेदी जी दो व्याख्यान प्रस्तुत किये। उन्होंने ताबीजी, गण्डी, कच्छपी आदि पाण्डुलिपियों के अनेक भेदों का उल्लेख करते हुए स्वहस्त लिखित 8 पाण्डुलिपियों तथा अपने यहाँ सुरक्षित ताबीजी पाण्डुलिपि के स्वरूप से प्रतिभागियों को परिचित कराया। पाण्डुलिपियों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए आनुष्ठानिक प्रयोजन हेतु कैसे धर्मग्रन्थ की पाण्डुलिपियाँ बनती और वितरित की जाती थी उस पर भी प्रकाश डाला।

भारतीय विद्या के सम्वर्धन में निरन्तर तत्पर सनातन कवि महामहोपाध्याय पण्डित रेवा प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि लिपिकार या लेखक की गलती को कवि की गलती नहीं माननी चाहिए, अधिकपाठ मिलना दोष है अतः भाषा की अशुद्धि पर ध्यान देना चाहिए। उनके अनुसार प्राचीन काल में लिखे गये पाण्डुलिपियाँ जितनी महत्त्वपूर्ण है अर्वाचीन विद्वानों द्वारा लिखी गयी कृतियाँ भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं अतः उनको भी पाण्डुलिपि मानना चाहिए।

जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर गंगाधर पण्डा जी ने पाण्डुलिपि सम्पादन में प्रयुक्त विधियों का उल्लेख किया तथा ओडिशा में प्राप्त सचित्र ताडपत्र पाण्डुलिपियों के विषय में विस्तार से चर्चा की।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, जैनागम विभाग के प्रोफेसर कमलेश कुमार जैन ने जैन पाण्डुलिपियों का उल्लेख करते हुए श्रुति–परम्परा से लिखित परम्परा के प्रचलन तक के इतिहास को रेखांकित करते हुए इस पर प्रकाश डाला कि जैन आचार्यो ने परम्परा के संरक्षण हेतु कैसे छात्र तैयार करते थे।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के निदेशक डॉ0 श्री प्रकाश पाण्डेय जी ने भारत में प्राप्त जैन पाण्डुलिपियों का उल्लेख करते हुए जैन वाचनाओं के विषय में विस्तार से चर्चा की।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर गोपबन्धु मिश्र जी ने ग्रन्थ सम्पादन : महाभाष्य के टीका के सन्दर्भ में विषय पर अपना व्याख्यान दिया। एकल पाण्डुलिपि के सम्पादन के समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए, असमंजस के स्थिति में क्या संकेत देना चाहिए आदि अनेक बिन्दु से प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कोलकाता विश्वविद्यालय से आमन्त्रित विदुषी प्रोफेसर रत्ना बसु जी ने पाँच उपयोगी एवं ज्ञानबर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने व्याकरण एवं छन्द–ज्ञान के आधार पर कैसे सम्पादन कार्य करना चाहिए तथा सम्पादन करते समय टीका, उप्टीका, टिप्पणी, वृत्ति, विवृत्ति, विवरण, पंजिका, पंचिका, पद्धति, कारिका, प्रक्षिप्त आदि का निर्धारण कैसे करें उस पर आलोकपात किया।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जयपुर परिसर से शारदा लिपि के विशेषज्ञ के रूप में आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर प्रकाश पाण्डेय जी अस्वस्थता के कारण उपस्थित नहीं हो सके। उनकी कमी को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परियोजना समन्वयक डॉ0 नरेन्द्र दत्त तिवारी ने पूरा किया। डॉ0 तिवारी ने नेवारी लिपि के उद्भव एवं विकास का उल्लेख करते हुए 25 जनवरी से 30 जनवरी तक नेवारी लिपि का अभ्यास कराया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय, व्याकरण विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर भगवत् शरण शुक्ल जी ने अक्षरारम्भ के लिए तिथि, लग्न, नक्षत्रादि के महत्त्व का उल्लेख करते हुए व्याकरणों के ग्रन्थों के सम्पादन के लिए पारिभाषिक शब्दों के ज्ञान को अत्यावश्यक माना तथा सम्पादन के विषय में प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रतिपादित सम्पादन सिद्धान्त का भी उल्लेख किया।

बी0 एल0 इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, नई दिल्ली से आमन्त्रित विद्वान् प्रोफेसर अशोक कुमार सिंह जी ने जैन आगमों में पाठभेद की प्रवृत्ति एवं छन्द की दृष्टि से पाठ निर्धारण विषय पर अत्यन्त ही उपयोगी व्याख्यान प्रस्तुत किया।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ0 ओम प्रकाश सिंह जी अपने व्याख्यान में पार्श्वनाथ विद्यापीठ के महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपियों के संग्रहों का उल्लेख करते हुए देवनागरी लिपि में लिखे जैन ग्रन्थ के पाण्डुलिपियों का अभ्यास कराया।

कार्यशाला का समापन सत्र दिनांक 31 जनवरी 2018 को पार्श्वनाथ विद्यापीठ के संगोष्ठी कक्ष में प्रोफेसर महेश्वरी प्रसाद जी की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर जय शंकर लाल त्रिपाठी जी मुख्य अतिथि एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् के सदस्य सचिव प्रोफेसर रजनीश शुक्ल जी ने विशिष्ट अतिथि पद को अलंकृत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 रजनीकान्त त्रिपाठी ने किया तथा कार्यशाला का समन्वयन डॉ0 त्रिलोचन प्रधान ने किया।

इस कार्यशाला के समापन सत्र में प्रोफेसर रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी, प्रोफेसर सीताराम दुबे, प्रोफेसर प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रोफेसर गोपबन्धु मिश्र, प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रोफेसर प्रद्युम्न साह, प्रोफेसर सुमन जैन, प्रोफेसर अशोक कुमार सिंह, डॉ0 अभिमन्यु सिंह, डॉ0 संजय सराफ आदि अनेक विद्वान् उपस्थित रहे।

सम्बन्धित विषय में रुचि रखने वाले शोधार्थियों/विद्वानों की एक श्रृंखला तैयार करना इस कार्यशाला का उद्देश्य था, जो फलित हुआ। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागियों ने नियमित रूप से उपस्थित होकर लिपिविज्ञान, पाण्डुलिपिविज्ञान, सम्पादन के सिद्धान्त एवं प्रविधियों के विषय में ज्ञानार्जन करने के साथ–साथ नेवारी एवं मलयालम लिपि का विधिवत् अभ्यास किया। ज्ञानार्जन की जिजीविषा एवं अध्ययन के प्रति गहन रुचि तथा परिश्रम के कारण सभी प्रतिभागियों ने मलयालम एवं नेवारी लिपि के लेखन एवं पठन में सिद्धता प्राप्त किया। कार्यशाला की समन्वयन का कार्य डॉ0 त्रिलोचन प्रधान ने किया।